

राजस्थान कर बोर्ड, अजमेर

अपील संख्या -911/2012/अजमेर

वाणिज्यिक कर अधिकारी, विशेष वृत्त, अजमेर

.....अपीलार्थी.

बनाम्

मैसर्स दशमेश ट्रेडर्स, ब्यावर

.....प्रत्यर्थी.

एकलपीठ

राजीव चौधरी, सदस्य

उपस्थित : :

श्री जमील जई

उप-राजकीय अभिभाषक।

.....अपीलार्थी की ओर से.

श्री ओ.पी. दोसाया

अभिभाषक

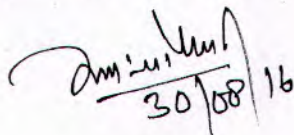
.....प्रत्यर्थी की ओर से.

दिनांक : 30.08.2016

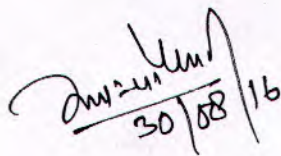
निर्णय

1. उक्त अपील राजस्व की ओर से उपायुक्त (अपील्स) वाणिज्यिक कर विभाग, अजमेर (जिसे आगे "अपीलीय अधिकारी" कहा गया है) के अपील सं. 220/10-11/वैट/ब्यावर में पारित किये गये आदेश दिनांक 07.12.2011 के विरुद्ध राजस्थान मूल्य परिवर्द्धित कर अधिनियम, 2003 (जिसे आगे 'अधिनियम' कहा गया है) की धारा 82 के तहत प्रस्तुत की गयी है।
2. प्रकरण के संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार है कि प्रत्यर्थी व्यवहारी निरमा प्रोडेक्ट्स का क्रेता एवं विक्रेता है। कर निर्धारण आदेश दिनांक 07.12.2011 में माना है कि अधिनियम की अनुसूची IV के तहत प्रत्यर्थी द्वारा विक्रय पुराना मोटरवाहन (Used Car) विक्रय मूल्य क्रमांश रुपये 4,41,751/-रुपये का किया। जिस पर अधिसूचना के अन्तर्गत पुराने वाहन पर 4 प्रतिशत से कर देयता 17,670/-रुपये एवं धारा 55 के तहत 33 माह का 12 प्रतिशत से ब्याज रुपये 5,831/- सहित कुल मांग राशि रुपये 23,501/- आरोपित किया गया। कर निर्धारण अधिकारी के आदेश के विरुद्ध व्यवहारी द्वारा प्रस्तुत अपील को अपीलीय अधिकारी द्वारा आदेश दिनांक 07.12.2011 द्वारा स्वीकार किया गया। वर्तमान अपील राजस्व द्वारा अपीलीय अधिकारी के आदेश दिनांक 07.12.2011 से व्यथित होकर प्रस्तुत की गई है।
3. अपीलार्थी राजस्व के विद्वान उप राजकीय अभिभाषक द्वारा तर्क प्रस्तुत किया गया है कि प्रयुक्त कार (Used Cars) के विक्रय पर करारोपण छूट जाने के कारण कर निर्धारण अधिकारी द्वारा वैट अधिनियम की धारा 26 के तहत प्रकरण में पुनः कर निर्धारण आदेश पारित करते हुए कर, ब्याज एवं शास्ति आरोपित किये जाने में कोई विधिक त्रुटि कारित नहीं की है। इस प्रकार विद्वान उप राजकीय

लगातार.....2


30/08/16

- अभिभाषक ने कर निर्धारण अधिकारी के आदेश समर्थन कर अपीलीय अधिकारी के आदेश दिनांक 07.12.2011 को अपास्त कर राजस्व की अपील को स्वीकार किये जाने का निवेदन किया।
4. प्रत्यर्थी की ओर से विद्वान अभिभाषक ने तर्क प्रस्तुत किया है कि कर निर्धारण अधिकारी द्वारा उक्त प्रकरण में इस अधिनियम की धारा 26 एवं धारा 55 के तहत कर निर्धारण करना त्रुटिपूर्ण है। अपीलीय अधिकारी द्वारा विक्रीत मोटर कार का व्यवहारी मुख्य व्यापार से कोई संबंध नहीं माना है न ही उसे कोई वाणिज्यिक वस्तु माना है। अतः अपीलीय अधिकारी द्वारा कर निर्धारण अधिकारी के करारोपण के आदेश को अपास्त करने में कोई त्रुटि कारित नहीं की है।
 5. विद्वान अभिभाषक द्वारा आगे यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि प्रत्यर्थी व्यवहारी द्वारा बिक्रीत मोटर कार का व्यक्तिगत उपयोग किया गया है तथा मोटरकार वाणिज्यिक सम्मति में नहीं आती है और न ही व्यवसाय के उपयोग में कनज्यूमेबल है तथा बिक्रीत मोटर कार व्यवसाय की बिक्री का हिस्सा भी नहीं है। उक्त मोटर कार दिनांक 01.04.2006 को खरीद कर ओपनिंग स्टॉक नहीं दर्शाया है। जिससे प्रत्यर्थी द्वारा चुकाये गये कर पर आईटीसी का लाभ भी प्राप्त नहीं किया। राजस्थान कर बोर्ड के निर्णय एसोसियेट्स स्टोन बनाम वाणिज्यिक कर अधिनियम (2003) 2 आरटीआर 245 एवं वाणिज्यिक कर अधिकारी अजमेर बनाम मैसर्स गुरुकृपा एजेन्सी, अजमेर टैक्स अपडेट 36 पेज 5 तथा मैसर्स कानूनगो एलांयज प्रा. लि., बासनी, जोधपुर बनाम वाणिज्यिक कर अधिकारी, वृत्त सी, जोधपुर टैक्स अपडेट 43 पेज 3 में भी यही सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि प्रयुक्त कार (Used Car) के विक्रय पर यदि उक्त कार का मुख्य व्यापार से कोई संबंध नहीं है तो उस पर करारोपण किया नहीं किया जा सकता। इस प्रकार प्रत्यर्थी के विद्वान अभिभाषक द्वारा उक्त अपील को अस्वीकार किये जाने का निवेदन किया।
 6. उभयपक्ष की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली का अवलोकन किया गया। कर निर्धारण आदेश दिनांक 13.12.2010 से स्पष्ट है कि कर निर्धारण अधिकारी ने पुरानी कार स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर कर निर्धारण छूट दिये जाने के कारण वेट अधिनियम की अनुसूची IV के क्रम संख्या 144 use motor vehicle पर 4 प्रतिशत की दर से कर निर्धारित किया।
 7. इस सम्बन्ध में वेट अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों का अध्ययन किया जाना समीचीन होगा :-


30/08/16

Sec. 2. Definitions.-

(6) "business" includes-

- (i) any trade, commerce or manufacture; or
(ii) any adventure or concern in the nature of trade, commerce or manufacture - whether or not such trade, commerce, manufacture, adventure or concern is carried on with a motive to make gain or profit, and whether or not any gain or profit accrues from such trade, commerce, manufacture, adventure or concern; or

(iii) any transaction in connection with or incidental or ancillary to such trade, commerce, manufacture, adventure or concern; or

(iv) any transaction in connection with or incidental or ancillary or consequential to the commencement or closure of such business; or

(v) any occasional transaction in the nature of such trade, commerce, manufacture, adventure or concern whether or not there is volume, frequency, continuity or regularity of such transaction;

(11) "dealer" means any person, who carries on business in any capacity, of buying, selling, supplying or distributing goods directly or otherwise, or making purchases or sales as defined in clause (35) for himself or others, whether for cash or deferred payment, or for commission, remuneration or other valuable consideration and shall include-

(i) a factor, broker, commission agent, del credere agent or any other mercantile agent, by whatever name called, and whether of the same description as hereinbefore mentioned or not, who carries on the business of buying, selling, supplying or distributing any goods belonging to any principal whether disclosed or not;

(ii) an auctioneer, who sells or auctions goods belonging to any principal, whether disclosed or not and whether the offer of the intending purchaser is accepted by him or by the principal or a nominee of the principal;

(iii) a manager or an agent, of a non-resident dealer who buys, sells, supplies or distributes goods in the State belonging to such dealer;

(iv) any society, club, trust or other association, whether incorporated or not, which buys goods from or sells goods to its members;

(v) casual trader;

(vi) the Central or any State Government or any of their Departments or offices which, whether or not in the course of business, buy, sell, supply or distribute goods directly or otherwise, whether for cash or deferred payment or for commission, remuneration or other valuable consideration; and

[Handwritten Signature]
30/08/16

लगातार.....4

(vii) any trading, commercial or financial establishment including a bank, an insurance company, a transport company and the like which, whether or not in the course of its business, buys, sells, supplies or distributes goods, directly or otherwise, whether for cash or deferred payment, commission, remuneration or other valuable consideration;

Explanation – A person, who sells agricultural or horticultural produce, grown by himself or grown on any land in which he has an interest as owner or tenant as defined in the Rajasthan Tenancy Act, 1955 (Act No. 3 of 1955), shall not be deemed to be a dealer in respect of such sales within the meaning of this clause;

(40) “taxable turnover” means, that part of turnover, as may be determined after making such deductions from the total turnover as may be prescribed on which a dealer shall be liable to pay tax under this Act;

(41) “turnover” means the aggregate amount of sale price received or receivable by a dealer including purchase price of the goods which are subject to tax under sub-section (2) of section 4 “but shall exclude the sale price or part of sale price, if any, in respect of sales of goods which were purchased in the State by the dealer upon payment of tax on the maximum retail price of such goods or, where tax on maximum retail price of such goods were paid in the State on an earlier occasion;

4. Levy of tax and its rate. –

(2) Every dealer who in the course of his business purchases any good other than exempted goods in the circumstances in which no tax under sub-section (1) is payable on the sale price of such goods and the goods are disposed off for the purpose other than those specified in clause (a) to (g) of sub-section (1) of section 18, shall be liable to pay tax on the purchase price of such goods at the rate mentioned against each of such goods in Schedule-III to Schedule VI of the Act.

8. इसी प्रकार विद्वान अभिभाषक प्रत्यर्थी व्यवहारी द्वारा राजस्थान कर बोर्ड के उद्धरित न्यायिक दृष्टान्त (2003) 2 आर.टी.आर. 245 एसोसियेट्स स्टोन बनाम वाणिज्यिक कर अधिकारी में माननीय बॉम्बे उच्च न्यायालय के न्यायिक दृष्टान्त 99 एस.टी.सी. 117 का अवलम्ब लेते हुए निम्न निर्णय पारित किया है :-

"8. As regards the second point whether the sale of old and used vehicles/bodies purchased earlier u/s 5CCCC of the RST Act after paying full tax could again be taxed under the law, I feel inclined to agree with the contention of the learned counsel for the appellants/assessed when he

[Handwritten Signature]
30/08/16

contended that the sale of these old vehicles having no connection with their main business of manufacture and sale of Kota Stones could not be taken as "sale" within the meaning of section 2(38) of the RST Act and hence these transactions of sale of old and discarded vehicles could not be taxed under the law. The fact that all these vehicles/bodies were purchased u/s 5CCCC of the RST Act after paying full tax precluded the learned AA from levying tax, interest and penalty on its sales again. the rulings relied upon by the learned counsel in this regard fully help their case. In this view of the matter, impugned order levying tax, interest and penalty of the sale of the old and used vehicles/bodies only deserved to have been quashed and set aside being contrary to law. Learned DC (Appeals), therefore, seems to have committed an error while remanding the case back to the learned AA for further inquiry without considering the argument made before him to this effect. In view of this discussion, the second point is answered in the negative."

9. इसी प्रकार राजस्थान कर बोर्ड के न्यायिक दृष्टान्त (2013) 36 टैक्स अपडेट 173 वाणिज्यिक कर अधिकारी, विशेष वृत, अजमेर बनाम मैसर्स गुरुकृपा एजेंसीज, ब्यावर में निम्न निर्णय पारित किया गया है :-

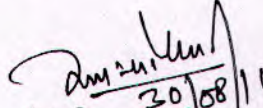
"6. I have carefully gone through the arguments of both the learned counsels and have also looked into the facts of the record. As regarding the sale of old and used vehicle, it is crystal clear that the car which has been sold by the Respondent is registered in the name of Mrs. Rajinder Kaur, who is the sole proprietor of the firm. I inclined to agree with the contention of the learned counsel that the sale of this old vehicle having no connection with her main business, could not be taken as "sale" within the meaning of section 2(35) of the Act and hence this transaction of sale of old vehicle cannot be taxed under the Act. The rulings relied upon by the learned counsel in this regard fully help her case. I have gone through the decision of the Humble RTB relied upon by the learned Appellate Authority while setting aside the order of penalty in this case. This decision fully covers the facts of this case and, therefore, in this view, learned Appellate Authority did not commit any error while passing the impugned order. Thus I find nothing wrong in the order passed by the learned appellate authority and therefore, no interference is required."

10. इस बोर्ड के उपरोक्त न्यायिक दृष्टान्तों के प्रकरण की तथ्य एवं परिस्थितियां वर्तमान प्रकरण के समान होने से उक्त न्यायिक दृष्टान्तों में प्रतिपादित सिद्धान्त वर्तमान प्रकरण पर पूर्ण रूप से लागू होते हैं। उक्त न्यायिक दृष्टान्त में मुख्य रूप से यही सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि यदि प्रयुक्त वाहर (used car) का संबंध उनके मुख्य व्यापार से नहीं है, तब उनका विक्रय धारा 2(35) के तहत

Amrinder Kaur
30/08/16

विक्रय की परिभाषा में नहीं आता है। अपीलार्थी के प्रयुक्त वाहन (used car) के विक्रय का मुख्य व्यापार से किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। अतः इसके विक्रय पर कर निर्धारण अधिकारी द्वारा अधिरोपित कर विधि सम्मत नहीं है। इस प्रकार कर निर्धारण अधिकारी द्वारा प्रयुक्त वाहन (Used Car) की बिक्री पर इस अधिनियम की धारा 26 एवं धारा 55 के तहत करारोपण करने में विधिक त्रुटि कारित की गयी है। अपीलीय अधिकारी ने आलौच्य आदेश दिनांक 07.12.2011 द्वारा अपील को स्वीकार करने में कोई त्रुटि कारित नहीं की गयी। अतः अपीलीय अधिकारी द्वारा पारित आदेश दिनांक 07.12.2011 की पुष्टि की जाती है।

11. अपीलार्थी राजस्व द्वारा प्रस्तुत अपील अस्वीकार की जाती है।
12. निर्णय सुनाया गया।


(राजीव चौधरी)
सदस्य